शोध प्रबन्ध / शोध प्रबंध की तैयार करने का प्रारूप

1. अनुक्रमणीका

शोध प्रबंध को जिस क्रम में व्यवस्थित और बंधित किया जाना चाहिए, वह इस प्रकार है –

1. **आवरण पृष्ठ एवं शीर्षक पृष्ठ**
2. **घोषणा (Declaration)**
3. **प्रमाणपत्र (Certificates)**
4. **आभार (एक पृष्ठ)**
5. **सारांश (300 शब्दों से अधिक नहीं)**
6. **विषय-सूची / अनुक्रमणिका**
7. **चित्र / प्रदर्श / आरेखों की सूची**
8. **सारिणियों (Tables) की सूची**
9. **प्रतीक एवं संकेतन**
10. **अध्याय (अनुमानतः छह या सात अध्याय)**
11. **संदर्भ सूची**
12. **परिशिष्ट (Appendices)**
13. **दो पूर्ण प्रकाशित शोध-पत्र प्रमाणपत्र सहित**
14. **दो सम्मेलन प्रमाणपत्र (आपके शोध क्षेत्र से संबंधित)**
15. **प्लेगैरिज़्म (साहित्यिक चोरी) रिपोर्ट** *(UGC संशोधन विनियम, 23 जुलाई 2018 के अनुसार)*
16. **प्लेगैरिज़्म (साहित्यिक चोरी) शपथ-पत्र** *(₹100/- के अशुल्क न्यायिक स्टाम्प पेपर पर विधिवत नोटरीकृत)*

2. पृष्ठ आयाम एवं बाइंडिंग विनिर्देश (Page Dimensions & Binding Specifications):

शोध प्रबन्ध का आकार बॉण्ड शीट (A4 साइज़) में होना चाहिए।

पृष्ठ विनिर्देश (Page Specification):

- बायाँ मार्जिन (Left Margin) : 1.5 इंच
- दायाँ मार्जिन (Right Margin) : 1 इंच
- ऊपर का मार्जिन (Top Margin) : 1 इंच
- नीचे का मार्जिन (Bottom Margin) : 1 इंच

शोध प्रबन्ध को लचीले आवरण (हार्ड बाइंडिंग) के साथ बंधित किया जाना चाहिए, जिसके लिए नीचे उल्लिखित रंगीन आर्ट पेपर का उपयोग किया जाए। आवरण पर काले अक्षरों में मुद्रण होना चाहिए और मुद्रण हेतु प्रयुक्त पाठ समान एवं एकरूप होना चाहिए।

निर्देशानुसार प्रत्येक कार्यक्रम (Programme) के लिए रिपोर्ट में सम्मिलित कुल पृष्ठों की संख्या निम्नानुसार प्रदर्शित की जाएगी।

पाठ्यक्रम	शोध प्रबन्ध के मुद्रित पृष्ठों का रंग	शोध प्रबन्ध में कुल पृष्ठों की संख्या	शोध प्रबन्ध के आवरण (कवर) का रंग
पीएचडी	सफेद	न्यूनतम 150 – अधिकतम-300	Navy-blue

पृष्ठ संख्या (Page Numbers):

सभी पाठ्य पृष्ठों तथा प्रोग्राम स्रोत कोड (Source Code) की सूचियों को अरबी अंकों (i,e – 1, 2, 3...) द्वारा क्रमांकित किया जाना चाहिए। यह क्रमांकन प्रत्येक पृष्ठ के निचले मध्य भाग (Bottom Center) में होना चाहिए।

फ़ॉन्ट (Font): **हिन्दी शोध प्रबन्ध के लिए** – पूरे पाठ में *कृति-10 (Kriti-10)* फ़ॉन्ट 15 पॉइंट आकार में समान रूप से प्रयोग किया जाना चाहिए। सारिणी एवं चित्रों के शीर्षक छोटे फ़ॉन्ट में हो सकते हैं, परन्तु 13 पॉइंट से छोटे नहीं होने चाहिए।

मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय शोध-प्रबन्ध / प्रबंध-प्रस्ताव प्रारूप

शोध प्रबन्ध का शीर्षक

(कोकिला फॉन्ट 24, युनिकोड फॉन्ट 22, कृतिदेव फॉन्ट 24)

------संकाय के अन्तर्गत ------- विषय में (कोकिला 16, युनिकोड 14, कृतिदेव 16 Bold Italic)

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

की उपाधि की आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

(कोकिला फॉन्ट 18, युनिकोड फॉन्ट 16, कृतिदेव फॉन्ट 18 Bold Italic)

(कोकिला फॉन्ट 20, युनिकोड फॉन्ट 18, कृतिदेव फॉन्ट 20 Italic)

शोधार्थी का नाम

(नामांकन संख्या-)

(कोकिला फॉन्ट 18, युनिकोड फॉन्ट 16, कृतिदेव फॉन्ट 18 Bold)

(कोकिला फॉन्ट 20, युनिकोड फॉन्ट 18, कृतिदेव फॉन्ट 20 Italic)

शोध निर्देशक

शोध निर्देशक का नाम

पद नाम

(कोकिला फॉन्ट 20, युनिकोड फॉन्ट 18, कृतिदेव फॉन्ट 20 Bold)

INSPIRING INTELLECT

मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय

सीहोर (मध्य प्रदेश), भारत

(कोकिला फॉन्ट 34, युनिकोड फॉन्ट 32, कृतिदेव फॉन्ट 34 Bold)

माह - वर्ष

(कोकिला फॉन्ट 24, युनिकोड फॉन्ट 22, कृतिदेव फॉन्ट 24 Bold)

मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय शोध-प्रबन्ध / प्रबंध-प्रस्ताव प्रारूप

शोध प्रबन्ध का शीर्षक

(कोकिला फॉन्ट 24, युनिकोड फॉन्ट 22, कृतिदेव फॉन्ट 24 Bold Italic)

------ संकाय के अन्तर्गत ------- विषय में (कोकिला 16, युनिकोड 14, कृतिदेव 16 Bold Italic)

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

की उपाधि की आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

(कोकिला फॉन्ट 18, युनिकोड फॉन्ट 16, कृतिदेव फॉन्ट 18 Bold)

(कोकिला फॉन्ट 20, युनिकोड फॉन्ट 18, कृतिदेव फॉन्ट 20 Italic)

शोधार्थी का नाम

(नामांकन संख्या-)

(कोकिला फॉन्ट 18, युनिकोड फॉन्ट 16, कृतिदेव फॉन्ट 18 Bold)

(कोकिला फॉन्ट 20, युनिकोड फॉन्ट 18, कृतिदेव फॉन्ट 20 Bold)

सह-पर्यवेक्षक का नाम

(सह-पर्यवेक्षक का पद)

(कोकिला फॉन्ट 20, युनिकोड फॉन्ट 18, कृतिदेव फॉन्ट 20 Bold)

(कोकिला फॉन्ट 20, युनिकोड फॉन्ट 18, कृतिदेव फॉन्ट 20 Bold)

शोध निर्देशक का नाम

शोध निर्देशक का पद

(कोकिला फॉन्ट 20, युनिकोड फॉन्ट 18, कृतिदेव फॉन्ट 20 Bold)

INSPIRING INTELLECT

मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय

सीहोर (मध्य प्रदेश), भारत

(कोकिला फॉन्ट 32, युनिकोड फॉन्ट 30, कृतिदेव फॉन्ट 32 Bold)

माह - वर्ष

(कोकिला फॉन्ट 24, युनिकोड फॉन्ट 22, कृतिदेव फॉन्ट 24)

शोधार्थी द्वारा घोषणा-पत्र

(कोकिला फॉन्ट 24, युनिकोड फॉन्ट 22, कृतिदेव फॉन्ट 24 Bold)

मैं यह घोषणा करता/करती हूँ कि "**...**" शीर्षक वाला यह शोध प्रबंध मेरा स्व-विकसित कार्य है, जिसे मैंने **..**(अनुसंधान पर्यवेक्षक) के निर्देशन में (केंद्र) में पूर्ण किया है, जिसे अनुसंधान डिग्री समिति द्वारा अनुमोदित किया गया है। मैंने केंद्र पर पर्यवेक्षक के साथ **240 दिनों** से अधिक की उपस्थिति दर्ज की है।

मैं यह भी घोषणा करता/करती हूँ कि मेरी सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार यह शोध प्रबंध किसी भी विश्वविद्यालय में किसी भी उपाधि हेतु बिना उचित उद्धरण के प्रस्तुत किसी अन्य कार्य का भाग नहीं है।

(कोकिला फॉन्ट 15, युनिकोड फॉन्ट 14, कृतिदेव फॉन्ट 14)

स्थान: सीहोर **अभ्यर्थी के हस्ताक्षर**

तिथि: (कोकिला फॉन्ट 15, युनिकोड फॉन्ट 14, कृतिदेव फॉन्ट 14)

शोध निर्देशक का प्रमाण-पत्र

(कोकिला फॉन्ट 24, युनिकोड फॉन्ट 22, कृतिदेव फॉन्ट 24 Bold)

यह प्रमाणित किया जाता है कि ……………………………………………………शीर्षक से प्रस्तुत शोधकार्य **…………………………………………………**द्वारा मेरे मार्गदर्शन एवं पर्यवेक्षण में शोध उपाधि डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी हेतु **…………………………………………………………..(म.प्र.)** भारत में किया गया है। मैं यह भी प्रमाणित करती हूँ कि अभ्यर्थी ने मेरे साथ **240 दिनों** से अधिक की उपस्थिति दर्ज की है।

मेरी सर्वोत्तम जानकारी और विश्वास के अनुसार यह शोध प्रबंध:

1. यह शोध प्रबंध शोधार्थी का मौलिक कार्य है।

2. यह शोध प्रबंध शोधार्थी द्वारा विधिवत रूप से पूर्ण किया गया है।

3. यह शोध प्रबंध विश्वविद्यालय के पी.एच.डी. डिग्री से संबंधित अधिनियम की सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

(कोकिला फॉन्ट 15, युनिकोड फॉन्ट 14, कृतिदेव फॉन्ट 14)

स्थान : सीहोर | **शोध निर्देशक के हस्ताक्षर**

तिथि : .... | (कोकिला फॉन्ट 15, युनिकोड फॉन्ट 14, कृतिदेव फॉन्ट 14)

संस्थानाध्यक्ष का प्रमाणपत्र / अनुशंसा पत्र

(कोकिला फॉन्ट 24, युनिकोड फॉन्ट 22, कृतिदेव फॉन्ट 24 Bold)

शोधार्थी का नाम................ द्वारा प्रस्तुत पी.एच.डी. शोधप्रबंध...............……………………………………………

....

....पाँच प्रतियों में विश्वविद्यालय को अग्रेषित किया जा रहा है।

अभ्यर्थी ने अपने शोध विषय पर ***पूर्व-प्रस्तुतीकरण संगोष्ठी/मौखकी*** समिति के समक्ष प्रस्तुत किया है, जिसे विषय विशेषज्ञ की पूर्व-प्रस्तुतीकरण रिपोर्ट के आधार पर संतोषजनक पाया गया है। अभ्यर्थी ने आवश्यक शुल्क का भुगतान कर दिया है तथा उस पर कोई शेष बकाया नहीं है।

नाम: ………………………………

मुद्रिका (सील): …………………

तिथि: ………………………

स्थान: ……………………

....

(संस्थान के प्रमुख के हस्ताक्षर जहाँ अभ्यर्थी ने पी.एच.डी. हेतु पंजीकरण कराया था)

शोध निर्देशक के हस्ताक्षर

तिथि:.......................

स्थान:.........................

तिथि: ……………………….

पता:………………………....

.............………………...........

....

(कोकिला फॉन्ट 15, युनिकोड फॉन्ट 14, कृतिदेव फॉन्ट 14)

आभार

(कोकिला फॉन्ट 24, युनिकोड फॉन्ट 22, कृतिदेव फॉन्ट 24 Bold)

सर्वप्रथम, मैं परमपिता परमेश्वर के प्रति अपनी गहन कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मुझे इस अध्ययन और शोध कार्य को प्रारंभ करने, इसे आगे बढ़ाने तथा पूर्ण करने हेतु शक्ति, संसाधन और मार्गदर्शन प्रदान किया। ईश्वर की कृपा के बिना यह उपलब्धि संभव नहीं हो पाती। सबसे पहले, मैं अपने **शोध निर्देशक ....**के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता/करती हूँ, जिन्होंने मेरे शोध क्षेत्र को आवश्यक दिशा प्रदान की। निस्संदेह, मैंने उनके गहन विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन से बहुत कुछ सीखा है।

मैं मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय, सीहोर (मध्य प्रदेश) की **माननीया कुलाधिपति श्रीमती मंजुला तिवारी, माननीय प्रो-कुलाधिपति इंजी. गौरव तिवारी तथा माननीय प्रो-कुलाधिपति डॉ. ए. के. पांडेय** के प्रति भी अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता/करती हूँ। मैं मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय, सीहोर (मध्य प्रदेश) के **कुलपति डॉ. ए. एस. यादव** के प्रति भी अपनी ईमानदार सराहना प्रकट करता/करती हूँ, जिन्होंने निरंतर मार्गदर्शन, सहयोग, प्रोत्साहन एवं विश्वविद्यालय के महत्वपूर्ण संसाधनों तक पहुँच प्रदान की।

मैं **कुलसचिव एवं अधिष्ठाता (अनुसंधान) डॉ. पुष्पेन्द्र तिवारी** के अमूल्य सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए भी अत्यंत आभारी हूँ, जिनकी विशेषज्ञता इस शोध में अत्यंत सहायक रहा/रही। मैं परीक्षा नियंत्रक **श्री मनोज नेहरा** के समर्पण और समस्याओं को सुलझाने की क्षमता की सराहना करता/करती हूँ, जिनके सहयोग से प्रशासनिक प्रक्रिया सहज रही। मैं मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय के समस्त स्टाफ सदस्यों के प्रति भी अपना गहरा आभार प्रकट करता/करती हूँ, जिनके सहयोग और समर्थन से मेरा शोध कार्य पूर्ण हो सका।

इन सभी का योगदान मेरी शोधयात्रा को संभव और सफल बनाने में अमूल्य रहा है।

(शोधार्थी का नाम)

(कोकिला फॉन्ट 15, युनिकोड फॉन्ट 14, कृतिदेव फॉन्ट 14)

संक्षेपिका

(कोकिला फॉन्ट 24, युनिकोड फॉन्ट 22, कृतिदेव फॉन्ट 24 Bold)

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं ज्ञान परंपरा की आधारशिला है, किंतु वर्तमान समय में विद्यालय स्तर पर इसकी लोकप्रियता में कमी देखी जा रही है। यह शोध "माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में संस्कृत भाषा के प्रति विद्यार्थियों की रुचि एवं शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन" समस्तीपुर जिला (बिहार राज्य) के संदर्भ में किया गया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि छात्र-छात्राओं में संस्कृत के प्रति कितनी रुचि है, वे इसे किस प्रकार से ग्रहण करते हैं, तथा उनकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ कैसी हैं। साथ ही यह भी विश्लेषण किया गया है कि कौन-कौन से सामाजिक, पारिवारिक तथा शैक्षणिक कारक विद्यार्थियों की इस विषय में उपलब्धियों को प्रभावित करते हैं।

शोध में यह पाया गया कि अधिकांश विद्यार्थी संस्कृत को एक कठिन विषय मानते हैं, विशेषकर उसकी व्याकरणिक जटिलताओं के कारण। शिक्षकों की संख्या की कमी, संसाधनों का अभाव, और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों की अनुपस्थिति भी विद्यार्थियों की रुचि को प्रभावित करते हैं। हालांकि कुछ विद्यालयों में रुचिकर शिक्षण विधियों, जैसे नाट्य, श्लोक गायन एवं संवाद अभ्यास आदि, से विद्यार्थियों में उत्साह देखा गया। यह भी स्पष्ट हुआ कि जिन विद्यालयों में शिक्षक प्रेरक, प्रशिक्षणयुक्त एवं नियमित हैं, वहाँ विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ तुलनात्मक रूप से बेहतर हैं। अतः सुझाव दिया गया कि संस्कृत शिक्षकों के प्रशिक्षण में सुधार, आधुनिक शिक्षण उपकरणों का उपयोग, तथा विद्यार्थियों को संस्कृति से जोड़ने वाले नवाचारों को अपनाया जाए ताकि संस्कृत के प्रति रुचि एवं प्रदर्शन दोनों में सुधार हो सके।

(कोकिला फॉन्ट 15, युनिकोड फॉन्ट 14, कृतिदेव फॉन्ट 14)

अध्याय 1

(कोकिला फॉन्ट 15, युनिकोड फॉन्ट 14, कृतिदेव फॉन्ट 14 Bold)

परिचय

(कोकिला फॉन्ट 18, युनिकोड फॉन्ट 16, कृतिदेव फॉन्ट 16 Bold)

1.1 वैदिक वांगमय क्या है (कोकिला फॉन्ट 18, युनिकोड फॉन्ट 16, कृतिदेव फॉन्ट 16 Bold)

वैदिक वाङ्मय भारतीय संस्कृति और साहित्य की सर्वप्रथम एवं मौलिक धरोहर है, जो वेदों और उनके सहायक ग्रन्थों के रूप में संरक्षित है। "वाङ्मय" का अर्थ है—वाणी से प्रकट हुआ ज्ञान, और जब यह ज्ञान वेदों के रूप में प्रकट हुआ, तब इसे "वैदिक वाङ्मय" कहा गया। इसमें मुख्यतः चार वेद – ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद सम्मिलित हैं, जिनमें मंत्र, स्तोत्र, प्रार्थनाएँ, यज्ञ-विधि तथा दार्शनिक चिंतन का अद्भुत संगम है। वेदों को "अपौरुषेय" कहा गया है, अर्थात् वे किसी मानव-रचित नहीं, अपितु अनादि और शाश्वत ज्ञान के रूप में ऋषियों को श्रुति द्वारा प्राप्त हुए। संक्षेप में, वैदिक वाङ्मय उस विशाल ज्ञान-भंडार का नाम है, जिसने मानव सभ्यता को सत्य, ऋतु (नैतिक नियम), और धर्म के आदर्श प्रदान किए। यह न केवल भारतीय चिंतन की आत्मा है, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए शाश्वत प्रेरणा-स्रोत भी है।

(कोकिला फॉन्ट 15, युनिकोड फॉन्ट 14, कृतिदेव फॉन्ट 14)

1.1.1 वैदिक वाङ्मय की प्रमुख विशेषताएँ **(कोकिला फॉन्ट 15, युनिकोड फॉन्ट 14, कृतिदेव फॉन्ट 14)**

वैदिक वाङ्मय अपनी व्यापकता, प्राचीनता और बहुआयामी स्वरूप के कारण विश्व के अद्वितीय साहित्यिक एवं दार्शनिक ग्रंथों में गिना जाता है। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

वैदिक वाङ्मय की विशेषताओं में सर्वप्रथम इसका *अपौरुषेय* स्वरूप उल्लेखनीय है, क्योंकि इसे मानव-रचित न मानकर अनादि और शाश्वत ज्ञान का भंडार माना गया है, जो ऋषियों को श्रुति के माध्यम से प्राप्त हुआ और इसीलिए वेदों को नित्य एवं अविनाशी कहा गया। इसका संरक्षण एवं संवहन *श्रुति-परंपरा* द्वारा हुआ, जहाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुरु-शिष्य संबंध के माध्यम से मौखिक रूप से इसका संप्रेषण किया गया, जिसके कारण यह आज भी अक्षुण्ण रूप में उपलब्ध है। वैदिक वाङ्मय की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता इसकी *बहुआयामी ज्ञान-संपदा* है, जिसमें धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों के साथ-साथ खगोल, गणित, चिकित्सा, कृषि, पर्यावरण, समाज, राजनीति तथा नैतिकता जैसे विविध आयामों से संबंधित बहुमूल्य ज्ञान संग्रहीत है। इसके अतिरिक्त, इसका सुव्यवस्थित *चार वेदों में वर्गीकरण* भी विशेष महत्व रखता है—ऋग्वेद में स्तोत्र और प्रार्थनाएँ, सामवेद में संगीतात्मक मंत्र, यजुर्वेद में यज्ञ-विधि और अथर्ववेद में जीवनोपयोगी प्रयोगों का वर्णन मिलता है। इन सब विशेषताओं के कारण वैदिक वाङ्मय केवल भारतीय संस्कृति का प्राचीन ग्रंथ न होकर, संपूर्ण मानवता के लिए मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत सिद्ध होता है। **(कोकिला फॉन्ट 15, युनिकोड फॉन्ट 14, कृतिदेव फॉन्ट 14)**

(To be submitted on a RS. 100/- Non-Judicial Stamp Paper dully notarized)

Affidavit

I, --S/O of Shri ------------------------------------ aged ------ years, resident of ……………………………………………………… ………………………………………………………..., Mobile No. ………………… do herby take oath and state:

(i) That I, am registered for the Ph.D. programme on the topic titled ……………………………………………………………………………………… …………………………………….. in the faculty of …………………… of Mansarovar Global University, Sehore. My Registration/Enrollment no. is …………………………….

(ii) That, the contents of my thesis submitted to the Mansarovar Global University, Sehore, for award of Ph.D. Degree are original and my own work, and is not plagiarized.

(iii) That, if, after checking my thesis for plagiarism by any standard plagiarism checking software, are found copied or come under plagiarism, I will be solely responsible for it and University shall have sole right to cancel my research work ab-initio.

(iv) That, this work has not been submitted by me for the award of any other Degree/Diploma in any other University/ Institute.

(v) That, I shall be responsible for any legal dispute/case(s) for violation of any provisions of the copyright Act relating to my thesis.

Date: …………………….. **DEPONENT**

Place: ………………….

VERIFICATION

I, the above-named deponent, do hereby take oath and verify that the contents of para (i) to (v) of above affidavit are true and correct to my personal knowledge and nothing has been concealed by me. No part of it is incorrect.

DEPONENT